आशा भोंसले सुरों के 'साहित्य संसार' का महाप्रयाण, इंदौर की माटी की महक अब परमात्मा के दरबार में

भारतीय संगीत जगत के उस अनुपम युग का आज अवसान हो गया, जिसने सात दशकों तक सुरों के इंद्रधनुष से विश्व को आलोकित किया। स्वर-साम्राज्ञी आशा भोंसले का 92 वर्ष की आयु में मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में निधन हो गया। उनके महाप्रयाण के साथ ही संगीत और संवेदनाओं का एक स्वर्णिम अध्याय इतिहास के पन्नों में अमर हो गया।

कनाडा की भोर में उठी वेदना

'साहित्य संसार परिषद' की भावांजलि

जब यह शोक-संदेश सात समंदर पार कनाडा पहुँचा, तो प्रवासी भारतीय समुदाय की आँखें नम हो उठीं। मूलतः इंदौर निवासी एवं 'साहित्य संसार परिषद' (कनाडा) के अध्यक्ष डॉ. मनोहर गोरे थियोलॉजियन ने अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए कहा– कनाडा की भोर में जब यह समाचार मिला कि स्वर-साम्राज्ञी आशा भोंसले ने 92 वर्ष का अपना सुहाना सफर पूर्ण कर लिया है, तो हृदय के एक कोने में गहन वेदना का संचार हुआ। क्या यह मधुर, अमर स्वर अब मौन हो जाएगा? किंतु अंतर्मन से एक दिव्य ध्वनि उठी–नहीं, वे इस धरती पर एक शताब्दी के लिए ईश्वर का अनुपम वरदान थीं। अब वे पंचतत्व के शरीर का परित्याग कर परमात्मा के दरबार में 'स्वर्ण स्वर्णिम स्वर-गायिका' के रूप में विराजमान होकर अनंत काल तक अपने अमर गीतों का गान करती रहेंगी। इस भावांजलि को काव्यात्मक स्पर्श देते हुए डॉ. गोरे एवं उनके सहयोगियों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए–

फूलों से दिलों में याद बनकर के रहेंगे हम,
चाहे मुरझा चुके फिर भी दिलों में महकते रहेंगे हम।

इंदौर का गौरव- सिख मोहल्ले से सुरों की उड़ान आशा भोंसले का जन्म 8 सितंबर 1933 को इंदौर के सिख मोहल्ला में हुआ था। उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर के सान्निध्य में इसी लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर की पावन भूमि पर उनके संगीत-साधना के बीज अंकुरित हुए।

इंदौर के राजवाड़ा एवं गणेश मंदिर के प्रति उनकी गहरी आस्था रही। आज वही इंदौर अपनी इस गौरवशाली पुत्री को अश्रुपूरित विदाई दे रहा है, जिसने विश्व-पटल पर इस नगर की पहचान को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

अमिट विरासत और अंतिम विदाई

'पद्म विभूषण' और बाबा साहेब फालके अवार्ड जैसे सर्वोच्च सम्मानों से विभूषित आशा जी ने 12,000 से अधिक गीतों के माध्यम से संगीत जगत में अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया। वे मंगेशकर परिवार की सुदृढ़ आधारशिला थीं। उनके सुपुत्र आनंद भोंसले के अनुसार, अंतिम संस्कार सोमवार, 13 अप्रैल 2026 को मुंबई के शिवाजी पार्क में राजकीय सम्मान के साथ संपन्न होगा।

अमर स्वर, अमर स्मृति

यद्यपि आज उनका भौतिक स्वरूप पंचतत्व में विलीन हो गया है, तथापि उनका स्वर, उनकी साधना और उनके गीत युगों-युगों तक मानवता के हृदय में गूंजते रहेंगे। जैसा कि डॉ. मनोहर गोरे ने भावपूर्ण शब्दों में व्यक्त किया–

वे गई नहीं हैं, वे स्वर बनकर अनंत में विलीन हुई हैं;
जहाँ हर धड़कन में उनका संगीत, और हर स्मृति में उनकी महक जीवित रहेगी।

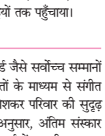

डॉ. मनोहर गोरे (अध्यक्ष, साहित्य संसार परिषद, कनाडा) एवं सहयोगियों द्वारा

अक्षरों में एकता, रिश्तों में संतुलन, जब उत्सव बन जाए संबंधों की असली कसौटी

भारतीय परिवार व्यवस्था केवल साथ रहने की परंपरा नहीं, बल्कि भावनात्मक परिपक्वता, परस्पर सम्मान और संतुलित व्यवहार की जीवंत प्रयोगशाला है। यहाँ हर संबंध अपनी विशिष्ट भूमिका और मर्यादा के साथ जुड़ा होता है। ऐसे ही एक परिवार की कल्पना कीजिए, जहाँ सभी सदस्यों–अजय (ससुर), अंजु (सास), अर्जुन (बेटा), आशिमा (ननद), अंकिता (बहू), अबीर और अमारिया (बच्चे)–के नाम एक ही अक्षर से प्रारंभ होते हैं। यह संयोग जितना आकर्षक है, उतना ही यह एक गहरा प्रतीक भी प्रस्तुत करता है कि बाहरी समानता के बावजूद आंतरिक संतुलन और व्यवहार ही परिवार की वास्तविक पहचान होते हैं।

परिवार में सास अंजु का जन्मदिन जब परंपरागत गरिमा, सादगी और सम्मान के साथ मनाया जाता है, तब उसमें वर्षों के अनुभव, त्याग और परिवार के प्रति उनके योगदान का आदर झलकता है। यह केवल एक उत्सव नहीं होता, बल्कि एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को दिए गए संस्कारों का सम्मान भी होता है। घर के बड़े सदस्य के रूप में उनका स्थान परिवार की धुरी के समान होता है, जिसके चारों ओर रिश्तों का संतुलन घूमता है।

वहीं, जब बहू अंकिता का जन्मदिन आता है, तो उसमें नई पीढ़ी की ऊर्जा, आधुनिक सोच और आत्मीयता का समावेश दिखाई देता है। बहू के रूप में वह केवल एक सदस्य नहीं, बल्कि परिवार की नई दिशा और संभावनाओं का प्रतिनिधित्व करती है। ऐसे अवसर पर उसकी अपेक्षाएँ स्वाभाविक रूप से सम्मान, स्वीकार्यता और समान महत्व की होती हैं। यह वह क्षण होता है, जब परिवार की परिपक्वता और समावेशी सोच की वास्तविक परीक्षा होती है।

इस पूरे परिदृश्य में बेटे अर्जुन की भूमिका अत्यंत केंद्रीय हो जाती है। वह एक ओर अपनी माता अंजु के प्रति कर्तव्य, श्रद्धा और भावनात्मक जुड़ाव से बंधा होता है, तो दूसरी ओर पत्नी अंकिता के प्रति अपने दायित्वों और संवेदनशीलता का निर्वहन करता है। यदि वह विवेक, धैर्य और संतुलन से कार्य करता है, तो परिवार में सौहार्द बना रहता है; अन्यथा छोटी-सी असावधानी भी ÷राई का पहाड़÷ बनने में देर नहीं लगाती।

ननद आशिमा की भूमिका भी इस संतुलन को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण होती है। यदि वह समझदारी, सहानुभूति और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाती है, तो वह सास और बहू के बीच एक सशक्त सेतु बन सकती है। उसका संतुलित व्यवहार परिवार में सामंजस्य को मजबूत करता है, जबकि असावधानी अनजाने में दूरी बढ़ा सकती है।

परिवार के छोटे सदस्य–अबीर और अमारिया–अपनी सरलता और निष्कपटता से घर के वातावरण को सहज बनाए रखते हैं। उनकी उपस्थिति यह स्मरण कराती है कि परिवार का वास्तविक उद्देश्य केवल संबंध निभाना नहीं, बल्कि अगली पीढ़ी को स्वस्थ, संस्कारित और संतुलित वातावरण देना भी है।

भारतीय परंपरा में परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति सम्मान को विशेष महत्व दिया गया है, जिसे एक श्लोक में अत्यंत सुंदर रूप में व्यक्त किया गया है–

÷मातृदेवो भव, पितृदेवो भव,
आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव।÷

यह श्लोक हमें यह सिखाता है कि परिवार में हर संबंध पूजनीय है। जब सास का आदर और बहू का सम्मान समान भाव से किया जाता है, तभी घर में वास्तविक शांति और संतुलन स्थापित होता है।

ऐसे पारिवारिक अवसर, जैसे जन्मदिन, केवल उत्सव भर नहीं होते, बल्कि यह रिश्तों की परख का अवसर भी बन जाते हैं। यहाँ यह देखा जाता है कि क्या सभी को समान महत्व मिल रहा है, क्या भावनाओं का सम्मान किया जा रहा है, और क्या संवाद की प्रक्रिया जीवंत बनी हुई है। यदि इन पहलुओं पर ध्यान दिया जाए, तो छोटे-छोटे आयोजन भी बड़े सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बन सकते हैं।

यह तथ्य कि परिवार के सभी सदस्यों के नाम एक ही अक्षर से प्रारंभ होते हैं, एक प्रतीकात्मक संदेश देता है कि बाहरी समानता केवल एक प्रारंभिक बिंदु है। वास्तविक एकता विचारों, व्यवहार और संवेदनशीलता में दिखाई देती है। यदि यह संतुलन बना रहे, तो परिवार हर परिस्थिति में सशक्त बना रहता है।

वर्तमान समय में, जब सामाजिक संरचनाएँ तेजी से बदल रही हैं और व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ बढ़ रही हैं, तब संयुक्त परिवारों में संतुलन बनाए रखना एक चुनौती बनता जा रहा है। ऐसे में आवश्यक है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य अपनी भूमिका को समझे, संवाद को प्राथमिकता दे और परस्पर सम्मान को सर्वोच्च स्थान दे।

अंततः, यह स्पष्ट होता है कि परिवार की वास्तविक शक्ति उसके सदस्यों के बीच सामंजस्य, विश्वास और सम्मान में निहित होती है। जन्मदिन जैसे अवसर केवल माध्यम हैं, जिनके जरिए हम अपने संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बना सकते हैं। जब परंपरा और आधुनिकता, अनुभव और ऊर्जा, अधिकार और कर्तव्य–इन सभी का संतुलित समन्वय होता है, तभी एक सशक्त, संस्कारित और आदर्श परिवार का निर्माण संभव होता है।

यही वह संदेश है, जिसे हमें अपने जीवन में आत्मसात करने की आवश्यकता है–कि परिवार केवल नामों की समानता से नहीं, बल्कि भावनाओं की एकता और व्यवहार की संवेदनशीलता से मजबूत बनता है।

अजय कुमार बियानी इंजीनियर और स्वतंत्र लेखक

सीज़फायर की सच्चाई-क्या युद्ध अब समझौतों से बड़ा हो गया है?

आधुनिक वैश्विक परिदृश्य में ÷सीज़फायर÷ शब्द एक आश्वासन की तरह सुनाई देता है–जैसे संघर्ष के बीच एक राहत का क्षण, जहाँ उम्मीद की थोड़ी-सी जगह बनती है। लेकिन हाल के घटनाक्रम यह संकेत दे रहे हैं कि क्या यह आश्वासन अब उतना भरोसेमंद रह गया है, जितना पहले हुआ करता था? अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जब भी युद्धविराम की घोषणा होती है, तो उसका स्वागत केवल राजनीतिक हलकों में ही नहीं, बल्कि आम लोगों के बीच भी राहत के रूप में होता है। संघर्ष क्षेत्रों में रहने वाले लोग इसे अपने सामान्य जीवन की ओर लौटने के अवसर के रूप में देखते हैं। किंतु कई बार यह राहत क्षणिक सिद्ध होती है, और परिस्थितियाँ पुनः तनावपूर्ण हो जाती हैं। ऐसी स्थितियाँ यह सोचने पर विवश करती हैं कि क्या युद्धविराम की अवधारणा अब पहले जैसी स्पष्ट और प्रभावी रह गई है। विभिन्न पक्षों के बीच हुए समझौतों में यदि शर्तों की व्याख्या अलग-अलग ढंग से की जाती है, तो उसका परिणाम भ्रम और अविश्वास के रूप में सामने आता है। यह स्थिति केवल कूटनीतिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि मानवीय स्तर पर भी गहरा प्रभाव डालती है। हाल के वैश्विक घटनाक्रम भी इस प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हैं। लंबे समय तक चले युद्धों–चाहे वह कोरिया, वियतनाम या अफगानिस्तान रहे हों–ने यह दिखाया है कि निरंतर संघर्ष न केवल आर्थिक और मानवीय दृष्टि से भारी पड़ते हैं, बल्कि उनके प्रति जनसमर्थन भी धीरे-धीरे कम होता जाता है। यही कारण है कि कई बार बड़ी शक्तियाँ भी शीघ्र समाधान या युद्धविराम की दिशा में आगे बढ़ने को प्राथमिकता देने लगती हैं। कूटनीति का उद्देश्य सदैव संवाद के माध्यम से स्थायी समाधान खोजना रहा है। किंतु जब संवाद में अस्पष्टता या अलग-अलग व्याख्याएँ शामिल हो जाती हैं, तब समझौते अपनी प्रभावशीलता खोने लगते हैं। इससे न केवल पक्षों के बीच विश्वास कम होता है, बल्कि भविष्य में होने वाली वार्ताओं पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। इतिहास भी यह दर्शाता है कि संघर्ष केवल सैन्य शक्ति से समाप्त नहीं होते। उनके पीछे सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक कारण होते हैं, जिन्हें समझे बिना स्थायी शांति संभव नहीं है। जब तक इन कारणों पर गंभीरता से विचार नहीं किया जाएगा, तब तक कोई भी युद्धविराम स्थायी समाधान में परिवर्तित नहीं हो सकेगा। यह भी महत्वपूर्ण है कि किसी भी संघर्ष में सबसे अधिक प्रभावित आम नागरिक ही होते हैं। उनके लिए ÷सीज़फायर÷ केवल एक शब्द नहीं, बल्कि जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर होता है। ऐसे में युद्धविराम की विश्वसनीयता और स्पष्टता अत्यंत आवश्यक हो जाती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि अंतरराष्ट्रीय समझौतों को अधिक पारदर्शी, स्पष्ट और उत्तरदायी बनाया जाए, ताकि वे केवल औपचारिक घोषणाएँ न बनकर वास्तविक समाधान की दिशा में प्रभावी कदम सिद्ध हों। अंततः प्रश्न यही है–क्या हम वास्तव में शांति की ओर बढ़ रहे हैं, या फिर युद्ध के बीच केवल विराम लेने की एक आदत विकसित कर चुके हैं?

-संध्या अग्रवाल
जबलपुर

भाजपा का मंडल स्तरीय पं.दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान 2026 शिविर हुआ

महिदपुर। जवाहर डोसी पीयूष भारतीय जनता पार्टी निर्देशानुसार मंडल स्तरीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान 2026 कार्यक्रम स्थानीय शिशु मंदिर विद्यालय में नगर मंडल द्वाराआयोजित किया गया।प्रशिक्षण शिविर में भारत माता, मां सरस्वती,पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ,श्यामाप्रसाद मुखर्जी के चित्रों पर पूजन माल्यार्पण के बाद दीपक प्रज्वलन के साथ शुभारंभ हुआ।प्रशिक्षण सत्र में मंचासीन रहे भाजपा जिला अध्यक्ष राजेश धाकड़,मदन सांखला घोंसला,श्याम बंसल तराना, राजपालसिंह राठौड़ बड़नगर,मंगेश वर्मा उन्हेल,अरुण चौधरी,श्रीमती नूतन मिश्रा, रामचंद्र आंजना,कैलाशपुरी गोस्वामी,श्रीमती शकुंतला कुमावत,नपा अध्यक्ष श्रीमती नानीबाई ओमप्रकाश माली पृथक-पृथक प्रशिक्षण सत्र में मंचासीन थे।

मंचासीन अतिथियों में वक्ता के रूप में जिला अध्यक्ष राजेश धाकड़ ने कहा-भाजपा में कार्यकर्ता ही महत्वपूर्ण है जो जनसंपर्क से लेकर आज तक कार्यरत है।उनकी सेवा तपस्या से ही आज हमारी पार्टी सर्वोच्च शिखर पर है।पद तो आते जाते रहते हैं मगर पार्टी में प्रशिक्षण में शिक्षण प्राप्त कर उसका अनुसरण भी करें। मध्यप्रदेश शासन की उपलब्धियों की जानकारी होना एवं जन-जन तक पहुंचाना जिसमें लाडली बहना, किसान सम्मान निधि, पेंशन योजना, लाडली लक्ष्मी योजना, गौशाला संचालन, संभल, मुख्यमंत्री स्व रोजगार, तीर्थ दर्शन, सामूहिक विवाह/ निकाह, सोलर पंप योजना, भावांतर, फसल बीमा योजना, मेधावी छात्र योजना आदि पर विस्तार से बताते हुए मध्यप्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव के द्वारा की जा रही उपलब्धियां को जन-जन तक पहुंचाने का आग्रह किया।

राजपालसिंह राठौड़ ने कहा-भारत देश में कुछ ऐसी पार्टियों हैं जो स्थाई सरकारों को सोशल मीडिया में भ्रम फैला कर बदनाम करने का कार्य कर रही हैं।उसके ठीक विपरीत भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता अपनी लगन मेहनत से कैसे कार्य करें।इस हेतु प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होता है। साथ ही बुथ का प्रबंधन एवं उसका समय-समय पर अपग्रेडेशन करना,मन की बात सूत्र पर विस्तार से कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया ।

श्याम बंसल ने कहा-सत्ता में कई पार्टियां आती-जाती रहती हैं परंतु जनता का आशीर्वाद व जनमत प्राप्त कर सत्ता में जाकर जनमानस के हितों को सर्वोपरि रखकर उस पर कार्य करना और योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाना ही असली सेवा है।यह कार्य केवल और केवल भारतीय जनता पार्टी देश में प्रदेश में निरंतर कार्य जारी है।विचारधारा के साथ सेवा ही संकल्प ,सुशासन के साथ कार्य करते हुए प्रत्येक जनमानस तक पहुंचना हमारा लक्ष्य है ।

मंगेश वर्मा ने कहा-भारतीय जनता पार्टी की स्थापना को जनसंघ से लेकर वर्तमान में सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने में बुथ एवं पेज प्रमुख की महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।पार्टी के सुशासन गीत के साथ ही योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष श्रीमती उमा पांडे, महिदपुर रोड सरपंच श्रीमति ऋतु सत्यनारायण पाटीदार,निरंजन मेहता, पंकज यादव, उषा जोशी, भगवतीप्रसाद जोशी, पार्षद जगदीश राठौर,आरती रावल, दिनेश ग्रोवर, निलेश सोलंकी, सतीश यादव, सुधीर मूणत, बहादुरसिंह आंजना, वजेसिह, प्रदीप पण्डया, कैलाश राठी, कार्यशाला प्रभारी निर्भयसिंह भाटी एवं श्रीमती ललिता परमार सहित मंडल के समस्त पदाधिकारी कार्यकर्ता एवं भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता उपस्थित थे।कार्यक्रम का संचालन कमल राठी ने किया, जानकारी मीडिया प्रभारी अर्जुनसिंह ठाकुर ने दी।

भीकनगांव में डॉ भीमराव अम्बेडकर जयंती समारोह आयोजित

भीकनगांव(इंदौर समाचार)-डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती समारोह 13 अप्रेल कार्यक्रम भीकनगांव में आयोजित अनुविभागीय अधिकारी एसडीएम लोकेश छापरे, तहसीलदार रविन्द्र चौहान, मुख्य कार्यपालन अधिकारी सीईओ नीलेश सोलंकी की उपस्थिति में किया गया।

डॉ भीमराव अम्बेडकर जयंती समारोह 14 अप्रेल 2026 के कार्यक्रम के संबंध में अनुविभाग भीकनगांव 13.04.2026 को डॉ. भीमराव अम्बेडकर भवन मण्डी रोड भीकनगांव में प्रात 11 को आयोजित किया गया कार्यक्रम में सर्वप्रथम केबी मंसारे द्वारा डॉ भीमराव अंबेडकर की जीवन परिचय के बारे में विस्तार से बताया गया अनुभाग स्तर पर कक्षा 10 वी से 12 वी में अधिक अंक प्राप्त करने वाले दो दो बालक बालिकाओं का सम्मान।किया गया उसके पश्चात समाज सेविकाओं का सम्मान।किया गया एवं हितग्राहियों को योजनाओं से लाभान्वित किया गया एवं डॉ भीमराव अंबेडकर संविधान की प्रस्तावना का वाचन।किया गया अंत में शपथ ।ली गई एवं

उक्त कार्यक्रम में अपने-अपने विभाग से लाभान्वित किये जाने वाले हितग्राहियों को हितलाभ प्रमाण-प्रत्र वितरण किए कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महेंद्र तंवर, नीतिन अग्रवाल, जगन चौहान, मंजू शुक्ला, महेश वर्मा,प्रशान्त भालसे,सुंदर बारसे, शांतिलाल मुकाती, नकुल कापसे हरीश शर्मा (दादा), खेमचंद्र शर्मा, कपिल वर्मा,उपस्थित थे। कार्यक्रम में झिरनिया और भीकनगांव विकासखंड शिक्षा अधिकारी विकासखंड स्त्रोत समन्वयक विकासखंड अकादमी समन्वयक सभी संस्थाओं के प्राचार्य एव शिक्षक व स्थानीय शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

साहूकार से सिस्टम तक, जहां बैंक नहीं पहुंचते, वहां उम्मीद पहुंचती है-मुद्रा योजना के 11 वर्ष

जब किसी देश की अर्थव्यवस्था की असली नब्ज टटोलनी हो, तो उसे सेंसेक्स की ऊंचाइयों में नहीं, बल्कि उन तंग गलियों में तलाशना पड़ता है जहां छोटे-छोटे कारोबार उम्मीद के सहारे सांस लेते हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के 11 वर्ष दरअसल उसी उम्मीद की गूंज हैं–एक ऐसा प्रयास, जिसने 'फंडिंग द अनफंडेड' के संकल्प को हकीकत में बदलते हुए उन हाथों तक पूंजी पहुंचाने की कोशिश की, जो अब तक केवल श्रम और जज्बे के भरोसे आगे बढ़ रहे थे। 8 अप्रैल 2015 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू की गई इस पहल ने सूक्ष्म उद्यमिता को न केवल पहचान दी, बल्कि उसे एक नई दिशा भी दी। फिर भी, ग्यारह साल बाद यह सवाल और अधिक तीखा हो उठा है–क्या यह बदलाव सचमुच जमीनी स्तर पर स्थायी रूप ले पाया है, या फिर आंकड़ों की चमक ने हकीकत के धुंधलेपन को ढक दिया है?

ग्यारह वर्षों की यह यात्रा केवल समय का विस्तार नहीं, बल्कि पैमाने और प्रभाव का भी सशक्त प्रमाण है। मार्च 2026 तक 57 करोड़ से अधिक ऋण खाते और 40 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का वितरण–ये आंकड़े अपने आप में एक आर्थिक परिवर्तन की कहानी बयां करते हैं। विशेष रूप से वित्त वर्ष 2025-26 में 5.65 लाख करोड़ रुपये का रिकॉर्ड वितरण यह दर्शाता है कि योजना अब केवल शुरुआत नहीं, बल्कि निरंतर विस्तार के चरण में है। बिना किसी गारंटी के 20 लाख रुपये तक का ऋण उपलब्ध कराना उस वर्ग के लिए ऐतिहासिक कदम साबित हुआ, जिसे कभी बैंकिंग व्यवस्था के दरवाजे पर भी जगह नहीं मिलती थी। इस पहल ने वित्तीय समावेशन को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाते हुए न केवल छोटे उद्यमियों को औपचारिक अर्थव्यवस्था से जोड़ा, बल्कि उन्हें विकास की मुख्यधारा में सक्रिय भागीदार भी बनाया।

इस योजना का सबसे मजबूत पक्ष इसका सामाजिक समावेशन है। लगभग 67 प्रतिशत (दो-तिहाई) ऋण खातों/लाभार्थियों का महिलाओं के नाम होना आर्थिक स्वतंत्रता में उनके बढ़ते योगदान और सशक्त भूमिका को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। एससी, एसटी और ओबीसी वर्गों की उल्लेखनीय भागीदारी यह बताती है कि योजना वंचित और हाशिए पर खड़े वर्गों तक प्रभावी रूप से पहुंची है। 12 करोड़ से अधिक नए उद्यमियों का पहली बार बैंकिंग प्रणाली से जुड़ना इसके व्यापक प्रभाव और वित्तीय समावेशन की गहराई को स्पष्ट करता है। लगभग 2 प्रतिशत के आसपास की कम एनपीए दर यह संकेत देती है कि छोटे उद्यमी भी ऋण का जिम्मेदारी से उपयोग कर रहे हैं और इसे सफलतापूर्वक चुकाने में सक्षम हैं।

महिलाओं के सशक्तिकरण में मुद्रा योजना का प्रभाव बेहद स्पष्ट और दूरगामी रहा है। पिछले कुछ वर्षों में 67 प्रतिशत से अधिक ऋण महिलाओं को मिलना इस बात का मजबूत संकेत है कि वे अब केवल घरेलू भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि स्थानीय और सूक्ष्म अर्थव्यवस्था की सक्रिय धुरी बन चुकी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे कस्बों तक बैंकिंग सेवाओं की पहुंच बढ़ने से साहूकारों पर निर्भरता में उल्लेखनीय कमी आई है। उत्तर प्रदेश, बिहार और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में बड़े पैमाने पर ऋण वितरण ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई गति दी है। इसके परिणामस्वरूप छोटे-छोटे व्यवसायों का विस्तार हुआ है और स्वरोजगार के माध्यम से रोजगार सृजन के नए अवसर लगातार विकसित हो रहे हैं।

जमीनी स्तर की कहानियां इस योजना की वास्तविक ताकत को सामने लाती हैं। बिहार की पूनम कुमारी (मशरूम उत्पादन) और असम की बिनीता (हस्तशिल्प/चाय उद्योग/स्थानीय उत्पाद) जैसी उद्यमियों की सफलता यह स्पष्ट करती है कि सीमित संसाधनों वाले छोटे सपनों को जब समय पर पूंजी मिलती है, तो वे बड़े और स्थायी बदलाव में बदल सकते हैं। नीति आयोग की रिपोर्ट भी इस तथ्य को स्वीकार करती है कि मुद्रा योजना ने सूक्ष्म उद्यमों को औपचारिक ऋण व्यवस्था से जोड़कर वित्तीय समावेशन को मजबूत किया है। इन उदाहरणों से यह साफ होता है कि यह योजना केवल ऋण देने तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसने लोगों को आत्मविश्वास, अवसर और आगे बढ़ने की नई दिशा भी प्रदान की है।

इस सफलता के बीच कुछ चुनौतियां भी सामने आती हैं। शिशु श्रेणी के छोटे ऋणों में स्थिरता और उन्नयन की दर अपेक्षाकृत कम रही है, जो उनकी दीर्घकालिक मजबूती पर सवाल उठाती है। कुछ रिपोर्टों में इन ऋणों की एनपीए दर लगभग 9 प्रतिशत तक बताई गई है, जो जोखिम का संकेत देती है। कई उद्यमियों को ऋण तो मिल जाता है, लेकिन उसके बाद मार्गदर्शन और कौशल प्रशिक्षण की कमी उन्हें आगे बढ़ने से रोक देती है। बैंकों पर लक्ष्य पूरा करने का दबाव भी कई बार गुणवत्ता की जगह संख्या को प्राथमिकता देता है, जिससे ऋण के बाद पर्याप्त निगरानी और सहयोग नहीं हो पाता और कई व्यवसाय टिक नहीं पाते।

इन चुनौतियों को देखते हुए सरकार ने सुधार की दिशा में कई ठोस कदम उठाए हैं। 'तरुण प्लस' जैसी नई श्रेणियों के जरिए बड़े ऋण की सुविधा बढ़ाई गई है, जबकि डिजिटल प्लेटफॉर्म के विस्तार से प्रक्रिया अधिक सरल और पारदर्शी बनी है। साथ ही स्किल डेवलपमेंट पर विशेष जोर देकर उद्यमियों की क्षमता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा संसद में दिए गए वक्तव्यों में बेहतर मॉनिटरिंग, ई-केवाईसी और मजबूत क्रेडिट मूल्यांकन प्रणाली पर लगातार बल दिया गया है। इन सुधारों का प्रभाव वित्त वर्ष 2025-26 के रिकॉर्ड वितरण में भी स्पष्ट दिखाई देता है, जो योजना की बढ़ती विश्वसनीयता और मजबूती को दर्शाता है।

जब सूक्ष्म स्तर पर बदलती अर्थव्यवस्था को समझा जाता है, तो प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की 11 वर्ष की यात्रा एक सरकारी पहल से आगे बढ़कर सामाजिक-आर्थिक बदलाव की प्रक्रिया के रूप में दिखती है। यह योजना करोड़ों लोगों को औपचारिक अर्थव्यवस्था से जोड़ते हुए नरेंद्र मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' के विचार को आगे बढ़ाने का माध्यम बनी है। फिर भी, इसकी असली सफलता तभी मानी जाएगी जब हर ऋण एक टिकाऊ व्यवसाय बने और हर उद्यमी आत्मनिर्भरता की मिसाल प्रस्तुत करे। इसके लिए 'क्रेडिट प्लस' मॉडल जरूरी है, जिसमें ऋण के साथ कौशल, मार्गदर्शन और बाजार पहुंच शामिल हो। तभी यह योजना आंकड़ों से आगे बढ़कर छोटे उद्यमियों की वास्तविक और स्थायी आर्थिक क्रांति बन सकेगी।

प्रो. आरके जैन अरिजीत
शिक्षाविद् बड़वानी (मप्र)
rtirkjain@gmail.com